Faridabad Plot Built Properties in all Sectors

SYNDICATE
ESTATE AGENCY
Ind. Plot no. 11,
Sector-15A, Faridabad.
Ph. : (o) 2284588
(R) : 2224288

Spl. In - Residential, Commercial & Industrial

मेहनतकशों का पैग़ाम
Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in

मज़दूर मोर्चा

मेहनतकशों के नाम

पाक्षिक

नेट पर उपलब्ध : www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06/R.N.I. No. 66400/97

ANCHOR ROADLINES
(Regd) SCO - 29, Shoping Centre, Sec. - 11D, FBD.
Daily Parcel Service
For : Noida, Surajpur, Kasna, Ghaziabad, Haridawar, Gurgaon, Manesar, Dharuhera, Bhiwadi, Vice Varsa
24, Hours Service
Phones : 2285044, 2291388

वर्ष 26 अंक 3 फरीदाबाद, रविवार, 16-31 दिसंबर 2012 फोन : - 9999595632 सहयोग राशि 2 रुपया

बलात्कार की भी एफ आई आर दर्ज नहीं करती पुलिस

ले दे कर समझौते का करती है प्रयास

फरीदाबाद (म.मो.) यूं तो किसी भी थाने में एफ आइ आर दर्ज कराना कोई आसान काम नहीं है, लेकिन थाना सराय ख्वाजा में तो पूरा गदर मचा हुआ है। इसका ताजा तरीन उदाहरण मंगलवार को तब देखने को मिला जब एक बलात्कार की शिकार 7 वर्षीय बच्ची की मां उसे इलाज के लिये शहर के बी के अस्पताल में ले कर पहुंची। मां ने बताया कि वारदात शनिवार दोपहर उस समय हुई जब बच्ची अपने 9 वर्षीय भाई के साथ स्कूल से पढ़ कर लौट रही थी। 12 वर्षीय बलात्कारी भी उसी स्कूल की छठी कक्षा का विद्यार्थी है। आरोपी ने बहला फुसला कर बहन को भाई से अलग किया और फ़िर पास के सुनसान में दुष्कर्म कर दिया। देर से घर पहुंचने पर जब मां ने बच्ची की हालत देख कर पूछताछ की तो सारी बात सामने आई। मां तुरन्त बच्ची को लेकर निकटतम पुलिस चौकी पल्ला पहुंची। पुलिस ने तुरंत दोषी व उसके परिजनों को बुला लिया; लेकिन मुकदमा दर्ज करने, बच्ची का मेडिकल कराने तथा दोषी की गिरफ़्तारी करने की अपेक्षा 'समझौता वार्ता' शुरू कर दी।

सर्वविदित है कि इस वार्ता में दोषी से उसकी देय क्षमता के अनुसार अच्छी खासी रकम वसूली जाती है जिसका मामूली सा हिस्सा पीड़ित को दे कर बाकी खुद पुलिस हड़प लेती है। इस के फ़लस्वरूप पुलिस को दोहरा फ़ायदा होता है। एक तो कागज़

काले करने से बच गये और अपराध का आंकड़ा भी नहीं बढ़ता, दूसरे बैठे बैठाये नकद आमदनी हो जाती है। अधिकांश मामलों में पुलिस ऐसा ही करती है। मुकदमा तो केवल उसका दर्ज हो पाता है जिसके पास पुलिस को देने के लिये मोटा पैसा हो या फ़िर तगड़ी प्रभावशाली सिफ़ारिश।

सोमबार को जब बच्ची की तबियत ज़्यादा बिगड़ी तो मां उसे ले कर अस्पताल पहुंची। डाक्टरों ने सारा मामला देख समझ कर पुलिस को सूचित किया, लेकिन उससे भी जब थाना सराय की पुलिस के कान पर जूं नहीं रेंगी तो कुछ, समाजसेवी बच्ची की मां को लेकर सेक्टर 21 स्थित पुलिस मुख्यालय पहुंच गये। वहां उपस्थित डीसीपी मुख्यालय विनोद कौशिक ने मामले का संज्ञान लेते हुए थाने वालों को लताड़ा, तब कहीं जाकर एस एच ओ ब्रह्म सिंह पर कुछ असर हुआ और वह स्वंय पीड़िता का बयान लेने अस्पताल पहुंचा। इसके आधार पर, 3 दिन बाद ही सही, बलात्कार का मुकदमा दर्ज हो गया तथा दोषी (बाल अपराधी) को गिरफ़्तार कर बाल अपराध न्यायालय में पेश कर दिया गया।

शेष पेज 2 पर

दमकल 'सेवा' एनओसी देने के लिये है,

आग बुझाने के लिये नहीं

फ़रीदाबाद (म.मो.) दिनांक 9 दिसम्बर को सीकरी-प्याला सड़क पर पेप्सी के गोदाम में लगी आग ने पूरी तरह साबित कर दिया है कि नगर निगम की दमकल 'सेवा' केवल एन ओ सी (अनापत्ति प्रमाणपत्र) देने के लिये है न कि आग बुझाने के लिये। विदित है कि रिहायशी भवन के अलावा शहर में जो भी भवन बनता है उसके लिये दमकल विभाग से एन ओ सी लेना आवश्यक होता है जिसके लिये अच्छी खासी रिश्वत का लेन देन जरुरी होता है।

उक्त गोदाम में लगी आग की सूचना दिन के 1.45 पर दमकल के फोन नं. 101 पर देने का प्रयास किया गया तो पता चला कि फ़ोन काम ही नहीं कर रहा है। पुलिस कंट्रोल रूम को 100 नम्बर पर फ़ोन किया तो पुलिस जरूर हरकत में आई। मौके पर पहुंची तथा दमकल वालों को भी पुलिस ने ही किसी तरह सूचित किया। इस सारे काम में करीब एक घंटा पचास मिनट लग गये। साढे 3 बजे करीब नगर निगम की 2 गाड़ियां लड़खड़ाती हुई घटनास्थल पर पहुंची तो उनके पास आग बुझाने की कोई व्यवस्था नहीं थी। पानी भी उनमें थोड़ा-थोड़ा ही था, जो 2 मिनट में समाप्त हो गया। उसके बाद वे आग बुझाने की बजाय पानी ढूंढने में लगे रहे। इसके बाद एक गाड़ी पलवल से तथा 3 अन्य गाड़ियां फ़रीदाबाद से भी पहुंची, लेकिन तब तक आग में जलकर सब कुछ राख हो चुका था। करोड़ों रूपये की इमारत भुरभुरा कर गिर चुकी थी। इमारत गिरने से आग की लपटें कुछ दब तो गयीं लेकिन भीतर-भीतर सुलगती रही।

इस गोदाम में लाखों रूपये के अंकल चिप्स व कुरकुरे आदि का भंडारण किया हुआ था। इसी गोदाम से कम्पनी का यह माल पूरे हरियाणा में सप्लाई किया जाता था। दमकल गाड़ियों के आने में देरी को देखते हुए वहां मौजूद श्रमिकों ने करीब 4-5 ट्रक माल गोदाम से बाहर निकाल कर बचाने का प्रयास भी किया था, लेकिन आग की विकराल लपटों ने इस माल को भी नहीं बख्शा।

शेष पेज 2 पर

■
इस गोदाम में लाखों रुपये के अंकल चिप्स व कुरकुरे आदि का भंडारण किया हुआ था। इसी गोदाम से कम्पनी का यह माल पूरे हरियाणा में सप्लाई किया जाता था। दमकल गाड़ियों के आने में देरी को देखते हुए वहां मौजूद श्रमिकों ने करीब 4-5 ट्रक माल गोदाम से बाहर निकाल कर बचाने का प्रयास भी किया था, लेकिन आग की विकराल लपटों ने इस माल को भी नहीं बख्शा।

धोखा रैली को विकास रैली बताया मुख्यमंत्री ने

फ़रीदाबाद (म.मो.) चौधरी महेन्द्र प्रताप सिंह ने अपने विधान सभा क्षेत्र में शक्ति-प्रदर्शन के लिये महीना भर कड़ी मेहनत व भारी भरकम खर्चा करके 9 दिसम्बर को 'विशाल' रैली का आयोजन किया। रैली का मकसद शहर का विकास बताया गया था। रैली में भारी जनसमूह को देख कर मुख्यमन्त्री हुड्डा गदगद हो जायेंगे जिससे वे शहर का विकास कर देंगे। रैली में भीड़ जुटाने के लिये सभी वर्गों को उनकी जरूरतों एवं मांगों के अनुरूप आश्वासन दिये गये। झुग्गी वालों को न उजाड़ने का वायदा, अवैध कालोनियों को नियमित करने का भरोसा, राशन कार्ड चाहने वालों को राशन कार्ड तो किसी को बिजली कनेक्शन तो किसी को सड़क व नाली पक्की कराने आदि को भरोसा दिया गया।

जिस तरह के हवाई वायदों पर भीड़ जुटाई गयी थी उसी तरह का हवाई

विकास मुख्यमंत्री हाथों हाथ कर भी गये। शहर के विकास पर किये गये तथा होने वाले करोड़ों रुपये खर्च का हिसाब उन्होंने दिया, जबकि शहर की वास्तविक दशा से हर शहरी खूब अच्छी तरह वाकिफ़ है तथा खर्च किये गये करोड़ों रुपये कौन सा गिरोह हड़प रहा है, किसी से छिपा नहीं है।

शहर को मोनो रेल द्वारा गुड़गांव से जोड़ने का हसीन ख्वाब भी शहर वासियों को दे गये। इसके देने में हर्ज भी क्या है, खर्चा तो कोई लगा नहीं, हिसाब किसी को देना नहीं, दो साल बाद दोबारा आना नहीं। मोनो रेल चलाने वाले मुख्यमंत्री साहब ने सड़क तो रिलांयस कम्पनी को बेच खाई अब जनता को मोनो रेल में बैठायेंगे। अगर इनकी नीयत साफ़ होती तो 750 करोड़ में रिलांयस को ठेका देने की बजाये मात्र 150-200 करोड़ के खर्च से रेलवे लाइन डाली जा सकती थी। लेकिन इनका निशाना तो अपनी जेब भरने व जनता की काटने पर रहता है। जिस मंच से मुख्यमंत्री विकास के गीत गा रहे थे उसी के एक बगल में इनका बी. के. अस्पताल है जहां की दुर्व्यवस्था के चलते बाथरूम और वार्ड के दरवाजों पर औरतों को बच्चा जनना पड़ता है। दूसरी बगल ई एस आई का वह अस्पताल है जिसे चलाने का 88 प्रतिशत खर्च केन्द्र सरकार हुड्डा सरकार को देती है। इसके बावजूद वहां न डाक्टर हैं न स्टाफ़ है न उपकरण। इतना ही नहीं इसी हुड्डा सरकार की काहिली के चलते अस्पताल के साथ बन चुके मेडिकल कालेज में जो दाखिला प्रक्रिया इसी वर्ष अगस्त में शुरू हो जानी थी अब 2014 में होने की संभावना है इसी विनाश को यह विकास बता रहे हैं और झूठ बोलने में कतई कोई शर्म व झिझक नहीं। विकास का एक और नमूना ओल्ड फ़रीदाबाद के चौक से रेलवे फ़ाटक के नीचे से बन रहा पुल है। छह माह के इस काम को रेंगते हुए करीब साढ़े तीन वर्ष हो चुके हैं।

शेष पेज 2 पर